



INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

मोहन राकेश के नाटकों में समय और अस्तित्व का द्वंद्व

Kamana Singh

1^० प्रस्तावना

हिंदी नाटक साहित्य में मोहन राकेश एक क्रांतिकारी लेखक के रूप में उभरे हैं जिन्होंने पारंपरिक रंगमंच की रूढ़ियों को तोड़ते हुए आधुनिक मानव की जटिलताओं और आंतरिक द्वंद्व को स्वर प्रदान किया। उनके नाटकों में **समय** केवल एक कालगत परिपाटी नहीं बल्कि एक मनोवैज्ञानिक तत्व है जो पात्रों के जीवन **निर्णय** और अस्तित्व को प्रभावित करता है। इसी प्रकार **अस्तित्व** उनके नाटकों में केवल शारीरिक उपस्थिति नहीं है बल्कि एक गहरे आत्म-संघर्ष, असंतोष और आत्मबोध की प्रक्रिया है। यह शोध-पत्र मोहन राकेश के नाटकों में समय और अस्तित्व के द्वंद्व की गहराई में उतरने का प्रयास है।

2^० मोहन राकेश का रचनात्मक परिप्रेक्ष्य

मोहन राकेश ;1925-1972 न केवल एक नाटककार थे बल्कि वे कहानी, उपन्यास और आत्मकथा के क्षेत्र में भी सक्रिय रहे। उन्होंने आधुनिकता के प्रभाव में भारतीय समाज और व्यक्ति की बदलती मानसिकता को गहराई से समझा और उसे अभिव्यक्त किया। **आषाढ़ का एक दिन**, **आधे-अधूरे** और **शहरों के राजहंस** जैसे नाटकों में उनका कलात्मक कौशल और दार्शनिक दृष्टिकोण परिलक्षित होता है। वे अपने पात्रों के माध्यम से उन संघर्षों को उजागर करते हैं जो आधुनिक जीवन की उलझनों, सामाजिक अपेक्षाओं और आत्मिक अस्थिरता के कारण उत्पन्न होते हैं।

3^० समय की अवधारणा दृष्टिगत ऐतिहासिक बनाम आत्मिक समय

मोहन राकेश के नाटकों में समय का तात्पर्य केवल घटनाओं के कालक्रम से नहीं है बल्कि वह एक जीवंत, गतिशील और प्रतीकात्मक तत्व बन जाता है। उदाहरणतः **आषाढ़ का एक दिन** में ऐतिहासिक समय की पृष्ठभूमि है कालिदास का जीवन, लेकिन उस ऐतिहासिकता के समानांतर नाटक में आत्मिक समय भी चलता है जहाँ पात्र अपने भीतर के द्वंद्व और निर्णय की प्रक्रिया से गुजरते हैं। **शहरों के राजहंस** में समय एक प्रतीक है जैसे बौद्ध भिक्षु बनने की चाह में जीवन के वर्तमान को त्याग देना। **आधे-अधूरे** में समय का तनाव वर्तमान पारिवारिक विघटन और उसके पीछे छिपे अतीत और भविष्य की आशा का रूप में दिखाई देता है।

4^ण अस्तित्व का संघर्ष दृ पात्रों की आंतरिक यात्रा

मोहन राकेश के पात्र जीवन के बाह्य संघर्षों से अधिक आंतरिक संघर्षों से ग्रस्त दिखाई देते हैं। शआषाढ़ का एक दिन^१ में मल्लिका और कालिदास दोनों ही अपने अस्तित्व को समय और कर्तव्य के चक्र में खोजते हैं। कालिदास की आत्मा कर्तव्य और यश की ओर खिंचती है^२ जबकि मल्लिका प्रेम और आत्मिक संतोष की ओर। इसी प्रकार शआधे.अधूरे^३ की सावित्री एक ऐसी स्त्री है जो एक पूर्ण व्यक्तित्व की खोज में विभिन्न संबंधों से गुजरती है^४ लेकिन हर बार अस्तित्व की अधूरी छवि से टकराती है। यह द्वंद्व ही मोहन राकेश के नाटकों की आत्मा है^५ जहाँ हर पात्र अपनी पहचान^६ उद्देश्य और संतुलन की तलाश में छटपटाता है।

5^ण नाट्य विश्लेषण

शआषाढ़ का एक दिन^१ कालिदास के माध्यम से उस द्वंद्व को दर्शाता है जहाँ व्यक्ति अपने कर्तव्य^२ महत्वाकांक्षा और निजी संबंधों के बीच उलझ जाता है। ऐतिहासिक पात्र होते हुए भी कालिदास का चित्रण एक सामान्य मनुष्य के रूप में किया गया है^३ जो अपनी पहचान के लिए संघर्ष करता है।

शआधे.अधूरे^४ में समय और अस्तित्व का द्वंद्व अत्यंत तीव्र है। सावित्री अपने परिवार में किसी भी व्यक्ति से संतोष नहीं पा पाती। वह बार.बार संबंधों में स्थिरता खोजती है लेकिन हर बार उसे विफलता मिलती है। यह विफलता केवल बाह्य नहीं^५ बल्कि उसके अस्तित्व की गहराई में है।

शलहरों के राजहंस^६ में यह द्वंद्व और अधिक दार्शनिक रूप ले लेता है। इसमें नंद एक ऐसे मोड़ पर खड़ा है जहाँ उसे संसार और सन्यास^७ प्रेम और त्याग के बीच निर्णय लेना है। उसका द्वंद्व न केवल उसके जीवन का है^८ बल्कि यह दर्शाता है कि व्यक्ति अपने समय और अस्तित्व के साथ किस प्रकार का संबंध बनाता है।

6^ण निष्कर्ष

मोहन राकेश के नाटकों में समय और अस्तित्व का द्वंद्व न केवल विषयगत संरचना है^१ बल्कि उनकी समग्र दृष्टि का हिस्सा है। वे अपने पात्रों के माध्यम से उस गहरे आत्म.संघर्ष को सामने लाते हैं जिसमें व्यक्ति अपने जीवन^२ सम्बंधों और निर्णयों के बीच संतुलन खोजने का प्रयास करता है। उनका नाट्य.साहित्य हिंदी रंगमंच को केवल एक नई भाषा नहीं देता^३ बल्कि सोचने और समझने की एक नई दृष्टि भी प्रदान करता है। आधुनिकता^४ विघटन^५ आत्मबोध और द्वंद्व को जिस गहराई से मोहन राकेश ने प्रस्तुत किया है^६ वह उन्हें हिंदी साहित्य के महान नाटककारों की पंक्ति में प्रतिष्ठित करता है।

7^ण संदर्भ ग्रंथ सूची

- 1^ण मोहन राकेश दृ आधे.अधूरे ;नाटकद्व
- 2^ण मोहन राकेश दृ आषाढ़ का एक दिन
- 3^ण मोहन राकेश दृ लहरों के राजहंस
- 4^ण डॉण नामवर सिंह दृ हिंदी नाट्य परंपरा

5^ए डॉण नीलम शुक्ला दृ आधुनिक हिंदी नाटक का विकास

6^ए रामविलास शर्मा दृ भारतीय साहित्य की भूमिका

